GOVT. OF INDIA- RNI NO. UPBIL/2014/56766
UGC Approved Care Listed Journal
ISSN 2348-2397

SIV

शोध सरिता

An International Multidisciplinary Quarterly
Bilingual Peer Reviewed Refereed Research Journal

• Vol. 8 • Issue 29 • January to March 2021

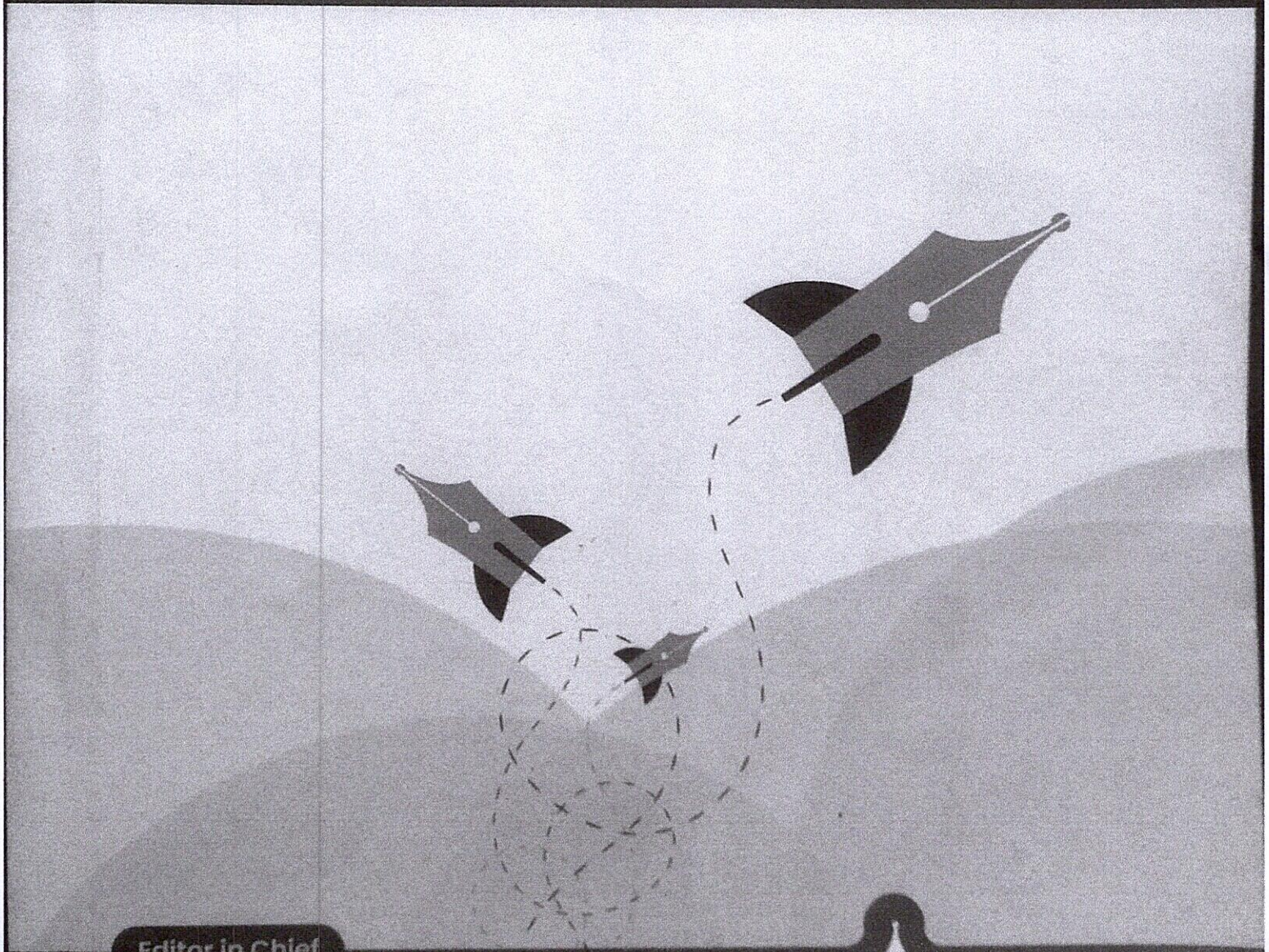

Editor in Chief
Dr. Vinay Kumar Sharma
D. Litt. - Gold Medalist

sanchar
Educational & Research Foundation

ISSN - 2348-2397
UGC CARE LISTED JOURNAL
SIV
शोध सरिता
January-March, 2021
Vol. 8, Issue 29
Page Nos. 211-215
AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

स्नातक महाविद्यालयों में कार्यरत् शिक्षकों की सेवा में भागीदारी का उनकी कार्य अक्रियाशील पर प्रभाव का अध्ययन

❑ डॉ0 रामा यादव*
जे. मजू**

शोध सारांश

प्रस्तुत अध्ययन छत्तीसगढ़ के स्नातक महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की सेवा में भागीदारी का उनकी कार्य अक्रियाशील पर प्रभाव का अध्ययन करना हैं। इस अध्ययन हेतु हेमचंद यादव विश्वविद्यालय से संबंधित महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को शामिल किया गया हैं। ये शिक्षक विभिन्न पाँच जिलों में अपनी सेवा प्रदान कर रहे हैं। अतः न्यादर्श का चुनाव हेमचंद यादव विश्वविद्यालय से संबंधित विभिन्न महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में से 120 शिक्षकों (60 पुरूश एवं 60 महिला) का चयन स्तरित यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया। शिक्षकों के सेवा में भागीदारी की मापन हेतु श्री उपेन्द्र धार, श्री संन्तोश धार एवं डी.के श्रीवास्तव द्वारा निर्मित सेवा में भागीदरी मापनी का उपयोग किया गया तथा कार्य अक्रियाशील के मापन हेतु प्रो.के.एस. मिश्रा द्वारा निर्मित कार्य अक्रियाशील मापनी का उपयोग किया गया। सांख्यिकी विश्लेशण के लिए 2 x 2 x 2 FD ANOVA का उपयोग किया गया। अध्ययन का निश्कर्श यह बताते है कि, महाविद्यालयीन शिक्षकों की सेवा में भागीदारी का इनकी कार्य अक्रियाशील पर सार्थक प्रभाव पाया गया।

Keywords : सेवा में भागीदारी (Job Involvement), कार्य अक्रियाशील (Job Burnout),शिक्षक (Teacher)

चर –

स्वतंत्र चर	–	सेवा में भागीदारी (Job Involvement)
आश्रित चर	–	कार्य अक्रियाशील (Job Burnout)

सेवा में भागीदारी (Job Involvement) :–

सेवा में भागीदारी को उस "डिग्री के रूप में वर्णित किया जाता है, जिसे किसी कर्मचारी ने अपने काम के साथ मनोवैज्ञानिक रूप से पहचाना है या उसकी कुल आत्मछवि में काम का महत्व है'। सेवा में भागीदारी से तात्पर्य है कि कैसे लोग कार्य संस्कृति, नौकरी के संबंध में अपनी नौकरी को पहचानते है और उनकी नौकरी तथा जीवन को कैसे एकीकृत करते हैं। इसके अलावा सेवा में भागीदारी को एक मनोवैज्ञानिक स्थिति के रूप में माना जा सकता है, जिसमें एक कर्मचारी संज्ञानात्मक रूप से व्याप्त है, जिसके कब्जे में है और जो वर्तमान नौकरी के साथ संबंधित है।

कार्य अक्रियाशील (Job Burnout) :–

कार्य आक्रियाशील एक विशिश्ट प्रकार की नौकरी से संबंधित तनाव है जो व्यक्ति के कार्य करने की क्षमता को बाधित करता हैं । अनुसंधान इंगित करता है कि जो कर्मचारी ऐसे व्यवसायों में है जो मानव सेवाओं में लगे व्यक्ति विशेश रूप से प्रभावी हैं । कार्य अक्रियाशील सिर्फ एक अस्थायी अविवेक नही बल्कि एक अस्वास्थ्यकर स्थिति हैं जो एक आदर्शवादी उत्पादक उत्साही कार्यकर्ताओं को उनके पेशे के लिए हानिकारक बना देता हैं । कार्य अक्रियाशील आमतौर पर सबसे सक्षम व्यक्तियों को प्रभावित करता है, जो सबसे अधिक सक्षम और प्रतिबद्ध है, वे इसे दृढता से महसूस करते हैं। भावनात्मक थकावट, अव्यक्तिकरण और कम व्यक्तिगत उपलब्धि कार्य अक्रियाशील के घटक हैं।

उद्देश्य

स्नातक महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की सेवा में भागीदारी, क्षेत्र, लिंग एवं इनकी अंतःक्रिया का कार्य अक्रियाशील पर प्रभाव का अध्ययन।

परिकल्पना

स्नातक महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की सेवा में भागीदारी, क्षेत्र, लिंग एवं इनकी अंतःक्रिया का कार्य अक्रियाशील पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन सर्वेक्षण विधि पर आधरित हैं । शोध के लिए हेमचंद यादव विश्वविद्यालय से संबंधित स्नातक

*शोध निर्देशक – सहायक प्राध्यापक, कल्याण पी.जी. महाविद्यालय, भिलाई नगर, (छ.ग.)
**शोधार्थी – सहायक प्राध्यापक, सेंट थॉमस कॉलेज, भिलाई (छ.ग.)

महाविद्यालयों के शिक्षको का चयन स्तरित यादृच्छिक विधि द्वारा किया गया ।

सांख्यिकी विश्लेषण

शोध अध्ययन में सांख्यिकी विश्लेशण के अंतर्गत प्रदत्तों का संकलन कर प्राप्त आँकड़ो को क्रमबद्ध रूप प्रदान कर 2 x 2 x 2 FD ANOVA का प्रयोग किया गया हैं ।

स्नातक महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की सेवा में भागीदारी, क्षेत्र, लिंग एवं इनकी अंतःक्रिया का कार्य अक्रियाशील पर प्रभाव के लिए 2x2x2 प्रसारण विश्लेशण तालिका क्रमांक 1 में प्रस्तुत किया गया हैं ।

तालिका क्रमांक 1

Source	SS	df	MSS	F Value
सेवा में भागीदारी	3167.915	1	3167.915	4.513*
क्षेत्र	95086.678	1	95086.678	135.459**
लिंग	346.058	1	346.058	0.493
सेवा में भागीदारी * क्षेत्र	76.283	1	76.283	0.109
सेवा में भागीदारी * लिंग	773.947	1	773.947	1.103
क्षेत्र * लिंग	3366.887	1	3366.887	4.796*
सेवा में भागीदारी * क्षेत्र * लिंग	1095.427	1	1095.427	1.561
त्रुटि	78619.279	112	701.958	
योग	3360255.000	120		
संशोधित योग	206113.125	119		

नोट :– ** significant at 0.01 level, * significant at 0.05 level

परिणाम एवं विवेचना

तालिका क्र. 1 के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि, महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के लिए सेवा में भागीदारी की F value का मान 4.513 df = 1/112 पाया गया । यह F value 0.05 स्तर पर सार्थक है अर्थात महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की सेवा में भागीदारी का इनकी कार्य अक्रियाशील पर सार्थक प्रभाव पाया गया । अतः शून्य परिकल्पना ''स्नातक महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की सेवा में भागीदारी का इनकी कार्य अक्रियाशील पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा'' को अस्वीकृत किया जाता हैं ।

उच्च तथा निम्न शिक्षकों की सेवा में भागीदारी का कार्य अक्रियाशील के मध्यमान एवं मानक विचलन तालिका क्र. 2 में प्रदर्शित किया गया हैं ।

तालिका क्रमांक 2

सेवा में भागीदारी	मध्यमान	मानक विचलन
उच्च	166.21	3.24
निम्न	155.06	4.12

तालिका क्र. 2 से स्पश्ट हैं कि उच्च सेवा में भागीदारी महाविद्यालयीन शिक्षकों की कार्य अक्रियाशीलता का मध्यमान 166.21 तथा मानक विचलन 3.24 है तथा निम्न सेवा में भागीदारी महाविद्यालयीन शिक्षको की कार्य अक्रियाशील का मध्यमान 155.06 तथा मानक विचलन 4.12 कि अपेक्षा अधिक है जो प्रदर्शित करता है कि उच्च सेवा में भागीदारी वाले महाविद्यालयीन शिक्षको की कार्य अक्रियाशील निम्न सेवा में भागीदारी वाले महाविद्यालयीन शिक्षको की कार्य अक्रियाशील से अधिक पाया

गया ।

इस विवेचना से यह स्पश्ट होता है कि, एसे शिक्षक जिनकी सेवा मे भागीदारी उच्च स्तर की है, उनकी कार्य अक्रियाशील के मध्यमान एवं एसे शिक्षक जिकी सेवा में भागीदारी निम्न स्तर की है, उनकी कार्य अक्रियाशील के मध्यमान में सार्थक अंतर हैं ।

वे शिक्षक जिनकी सेवा में भागीदारी उच्च स्तर की है, उनकी कार्य अक्रियाशील का मध्यमान 166.21 पाया गया तथा वे शिक्षक जिनकी सेवा में भागीदारी निम्न स्तर की है, उनकी कार्य अक्रियाशील का मध्यमान 155.06 पाया गया । अर्थात ऐसे शिक्षक जिनकी सेवा में भागीदारी उच्च स्तर की है, उनकी कार्य अक्रियाशील ज्यादा है, और एसे शिक्षकों के, जिनकी सेवा में भागीदारी निम्न स्तर की है । उनकी कार्य अक्रियाशील कम है ।

क्षेत्र का प्रभाव

तालिका क्र. 1 से यह स्पश्ट है कि, कार्य अक्रियाशील के लिए क्षेत्र के F value का मान 135.45, df = 1/112 पाया गया । यह F value 0.01 स्तर पर सार्थक है अतः शून्य परिकल्पना "स्नातक महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के क्षेत्र का इनकी कार्य अक्रियाशील पर कोई सार्थक प्रभाव नही पाया जायेगा" को अस्वीकृत किया जाता हैं ।

शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालयीन शिक्षकों की सेवा में भागीदारी का कार्य अक्रियाशील का मध्यमान एवं मानक विचलन तालिका क्र. 3 में प्रदर्शित किया गया हैं ।

तालिका क्रमांक 3

क्षेत्र	मध्यमान	मानक विचलन
शहरी	191.18	3.52
ग्रामीण	130.09	3.88

तालिका क्र. 3 से स्पश्ट है कि शहरी क्षेत्र के महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य अक्रियाशील का मध्यमान 191.18 तथा मानक विचलन 3.52 है तथा ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य अक्रियाशील का मध्यमान 130.09 तथा मानक विचलन 3.88 कि अपेक्षा अधिक है जो प्रदर्शित करता है कि शहरी क्षेत्र के महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य अक्रियाशील ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों से अधिक हैं ।

इस विवेचना से यह ज्ञात होता है कि, ऐसे महाविद्यालयीन शिक्षक जो शहरी क्षेत्र में कार्यरत है इनकी कार्य अक्रियाशील के मध्यमान एवं ऐसे महाविद्यालयीन शिक्षक जो ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत है इनकी कार्य अक्रियाशील का मध्यमान में सार्थक अंतर हैं ।

वे शिक्षक जो शहरी क्षेत्र के महाविद्यालयों में कार्यरत है उनकी कार्य अक्रियाशील का मध्यमान 191.18 पाया गया तथा वे शिक्षक जो ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालयों में कार्यरत है उनकी मध्यमान 130.09 पाया गया । अर्थात यह कहा जा सकता है कि शहरी क्षेत्र के महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य अक्रियाशील ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों से अधिक हैं ।

लिंग का प्रभाव

तालिका क्रमांक 1 से यह स्पश्ट है कि, कार्य अक्रियाशील के लिये लिंग के F value का मान 0.493, df = 1/112 पाया गया । यह F value किसी भी स्तर पर सार्थक नही पाया गया । अतः शून्य परिकल्पना "स्नातक महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के लिंग का इनकी कार्य अक्रियाशील पर कोई सार्थक प्रभाव नही पाया जायेगा" को स्वीकार किया जाता हैं ।

सेवा में भागीदारी एवं क्षेत्र की अंतःक्रिया का प्रभाव

तालिका क्रमांक 1 से यह भी स्पश्ट है कि, कार्य अक्रियाशील के लिए सेवा में भागीदारी एवं क्षेत्र की अंतःक्रिया की F value का मान 0.109, df = 1/112 पाया गया । यह F value किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं पाया गया । अतः शून्य परिकल्पना "स्नातक महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की सेवा में भागीदारी एवं क्षेत्र की अंतःक्रिया का कार्य अक्रियाशील पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा" स्वीकृत किया जाता हैं ।

सेवा में भागीदारी एवं लिंग की अंतःक्रिया का प्रभाव

तालिका क्रमांक 1 से यह स्पश्ट है कि, कार्य अक्रियाशील के लिये सेवा में भागीदारी एवं लिंग की अंतःक्रिया की F value का मान 1.103, df = 1/112 पाया गया । यह F value किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं पाया गया । अतः शून्य परिकल्पना "स्नातक महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की सेवा में भागीदारी एवं लिंग की अन्तःक्रिया का कार्य अक्रियाशील पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा" स्वीकृत किया जाता हैं।

क्षेत्र एवं लिंग की अंतःक्रिया का प्रभाव

तालिका क्रमांक 1 से यह भी स्पश्ट है कि, कार्य अक्रियाशील के लिये क्षेत्र एवं लिंग की अंतःक्रिया की F value का मान 4.796, df = 1/112 पाया गया । यह F value 0.05 स्तर पर सार्थक है अतः शून्य परिकल्पना "स्नातक महाविद्यालयों

में कार्यरत शिक्षकों के क्षेत्र एवं लिंग की अन्तःक्रिया का कार्य अक्रियाशील पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा'' अस्वीकृत किया जाता हैं ।

शहरी क्षेत्र के पुरूश एवं महिला तथा ग्रामीण क्षेत्र के पुरूश एवं महिला महाविद्यालयीन शिक्षकों की सेवा में भागीदारी का कार्य अक्रियाशील का मध्यमान एवं मानक विचलन तालिका क्रमांक 4 में प्रदर्शित किया गया हैं ।

तालिका क्रमांक 4

क्षेत्र	लिंग	मध्यमान	मानक विचलन
शहरी	पुरूष	198.77	5.13
	महिला	183.59	4.84
ग्रामीण	पुरूष	126.18	6.04
	महिला	133.99	4.88

तालिका क्रमांक 4 से स्पश्ट है कि, शहरी क्षेत्र के महाविद्यालयों में कार्यरत पुरूश शिक्षकों की कार्य अक्रियाशील का मध्यमान 198.77 तथा मानक विचलन 5.13 है महिला शिक्षकों की कार्य अक्रियाशील का मध्यमान 183.59 तथा मानक विचलन 4.84 कि अपेक्षा अधिक है जो प्रदर्शित करता है कि, शहरी क्षेत्र के महाविद्यालयों में कार्यरत पुरूश शिक्षकों की कार्य अक्रियाशील महिला शिक्षकों से अधिक हैं । तथा ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालयों में कार्यरत पुरूश शिक्षकों की कार्य अक्रियाशील का मध्यमान 126.18 तथा मानक विचलन 6.04 है तथा महिला शिक्षकों की कार्य अक्रियाशील का मध्यमान 133.99 तथा मानक विचलन 4.88 कि अपेक्षा कम है जो यह प्रदर्शित करता है कि, ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की कार्य अक्रियाशील पुरूश शिक्षकों से अधिक हैं ।

इस विवेचना से यह स्पश्ट होता है कि, शहरी क्षेत्र के महाविद्यालयों में कार्यरत पुरूश शिक्षकों की कार्य अक्रियाशील का मध्यमान एवं शहरी क्षेत्र के महाविद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की कार्य अक्रियाशील का मध्यमान में सार्थक अंतर हैं। तथा ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालयों में कार्यरत पुरूश शिक्षकों की कार्य अक्रियाशील का मध्यमान एवं ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की कार्य अक्रियाशील का मध्यमान में सार्थक अंतर है अर्थात यह कहा जा सकता है कि, शहरी क्षेत्र के महाविद्यालयों में कार्यरत पुरूश शिक्षकों की कार्य अक्रियाशील ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की कार्य अक्रियाशील अधिक पाया गया हैं।

सेवा में भागीदारी, क्षेत्र एवं लिंग की अंतःक्रिया का प्रभाव

तालिका क्रमांक 1 से यह स्पश्ट है कि, कार्य अक्रियाशील के लिये सेवा में भागीदारी, क्षेत्र एवं लिंग की अंतःक्रिया की F value का मान 1.561, df= 1/112 पाया गया । यह F value किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं पाया गया । अतः शून्य परिकल्पना ''स्नातक महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के सेवा में भागीदारी, क्षेत्र एवं लिंग की अन्तःक्रिया का कार्य अक्रियाशील पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा'' स्वीकृत किया जाता हैं ।

निष्कर्ष

प्राप्त परिणामों की विवेचना के आधार पर निम्नलिखित निश्कर्श निकाले गए है :

1. महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की सेवा में भागीदारी के उच्च एवं निम्न स्तर पर कार्य अक्रियाशील के मध्य सार्थक प्रभाव पाया गया । उच्च सेवा में भागीदारी वाले महाविद्यालयीन शिक्षकों की कार्य अक्रियाशील निम्न सेवा में भागीदारी वाले महाविद्यालयीन शिक्षकों की कार्य अक्रियाशील से अधिक पाया गया ।
2. महाविद्यालयो में कार्यरत शिक्षकों के क्षेत्र का इनकी कार्य अक्रियाशील के मध्य सार्थक प्रभाव पाया गया । शहरी क्षेत्र के महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य अक्रियाशील ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों से अधिक हैं।
3. महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के लिंग का इनकी कार्य अक्रियाशील पर कोई सार्थक प्रभाव नही पाया गया ।
4. महाविद्यालयीन शिक्षकों की सेवा में भागीदारी एवं क्षेत्र की अंतःक्रिया का इनकी कार्य अक्रियाशील पर कोई सार्थक प्रभाव नही पाया गया ।
5. महाविद्यालयीन शिक्षकों की सेवा में भागीदारी एवं लिंग की अंतःक्रिया का इनकी कार्य अक्रियाशील पर कोई सार्थक प्रभाव नही पाया गया ।
6. महाविद्यालयीन शिक्षकों के क्षेत्र एवं लिंग की अन्तःक्रिया का इनकी कार्य अक्रियाशील पर सार्थक प्रभाव पाया गया । शहरी क्षेत्र के महाविद्यालयों में कार्यरत पुरूश शिक्षकों की कार्य अक्रियाशील शहरी क्षेत्र के महाविद्यालयों में

कार्यरत महिला शिक्षकों से अधिक हैं। तथा ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की कार्य अक्रियाशील ग्रामीण क्षेत्र के महाविद्यालयों में कार्यरत पुरूश शिक्षकों से अधिक हैं ।

7. महाविद्यालयीन शिक्षकों की सेवा में भागीदारी क्षेत्र एवं लिंग की अन्तःक्रिया का इनकी कार्य अक्रियाशील पर कोई सार्थक प्रभाव नही पाया गया ।

व्याख्या

महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षको की सेवा में भागीदारी का उनके कार्य अक्रियाशील के अध्ययनों की समीक्षा से ज्ञात होता है कि, जो लोग अधिक प्रतिबद्धता एवं आदर्शवादी विचारों से कार्य प्रारम्भ करते है उनमें कार्य अक्रियाशील का जल्दी शिकार हो जाने की सम्भावना होती हैं । शिक्षकों के शिक्षण कार्य भी एक आदर्शवादी कार्य माना जाता हैं । और इस कार्य में जो व्यक्ति आते है प्रायः वे उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले होते हैं । अपनी उच्च योग्यता और अत्यधिक आदर्शवादी सोच के कारण इनमें, सेवा में भागीदारी का उच्च स्तर के कारण, इनमें कार्य अक्रियाशील के संलक्षण अपेक्षाकृत जल्दी उत्पन्न हो सकते हैं । वर्तमान आधुनिक युग में प्रतिस्पर्धा के कारण शिक्षण कार्य की जो परिस्थितियां है वे शिक्षकों में कार्य अक्रियाशील उत्पन्न करने में सक्षम प्रतीत होती हैं ।

References :

1. Igbaria, M., et al.(1994). Work Experiences, Job Involvement, and Quality of work life among Information system personnel. *MIS Quartely*, 18(2), 175-201. doi : 10.2307/249764
2. Berlin, C., & Adams, C. (2012) psychosocial Factors and worker Involvement. In production Ergonomics : *Designing work systems to support optimal Human Performance* (PP 107-124). London : Ubiquity press. Retrieved March 1 2021 form http://www.jstor.org/stable/j.ctv3tsqtf.10
3. Zhang, S. (2014) Impact of Job Involvement on Organizational citizenship Behaviors in china. *Journal of Business Ethics*, 120 (2) 165-174.
4. Yu, X., et al. (2015). The effect of work stress on job Burnout Among Teachers : The mediating Role of self efficacy. *Social Indicators Research*, 122 (3) 701-708.
5. Birdie, A., & Jain, M. (2015). Organizational climate & Job Involvement amongvirtual workers in service Organizations *Indian Journal of Industrial Relations*, 51 (2), 327-337.

❒❒❒